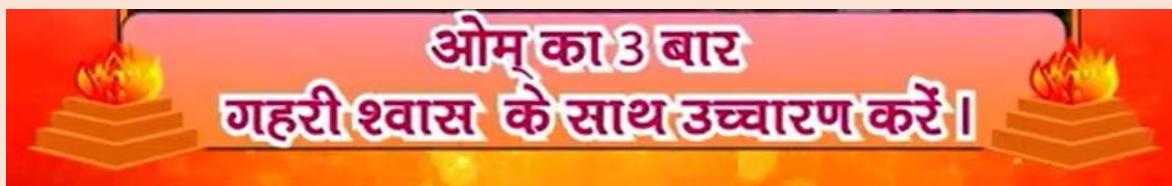


देव यज्ञ करने की विधि



आचमन मंत्र – दाहिने हाथ में जल लेकर तीन आचमन करें।

निम्न मन्त्रों से तीन आचमन करें- (1) ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥	निम्न मन्त्रों से तीन आचमन करें- (2) ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥	निम्न मन्त्रों से तीन आचमन करें- (3) ओम् सत्यं यशः श्रीर्पयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥
---	--	--

पुनश्च हस्त प्रक्षालन करें।

अंग स्पर्श- बाएँ हाथ में जल लेकर (दाहिने से बाएँ) निम्न मन्त्रों से अंगों का स्पर्श करें।

ओम् वाढ् म आस्येऽस्तु ॥ (इस मंत्र से मुख पर स्पर्श करें)	ओम् नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ (इस मंत्र से दोनों नासिकाओं पर स्पर्श करें)
ओम् अक्षणोर्मे चक्षुरस्तु ॥ (इस मंत्र से दोनों आँखों पर स्पर्श करें)	ओम् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ (इस मंत्र से दोनों कानों पर स्पर्श करें)
ओम् बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ (इस मंत्र से दोनों भ्रुजाओं पर स्पर्श करें)	ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥ (इस मंत्र से दोनों ज़ंघाओं पर स्पर्श करें)
ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सनु ॥ (इस मंत्र से सभी अंगों पर जल छिके)	

अथ ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना

निम्न मंत्रों से ईश्वर की उपासना करेंगे।

ओम्

विश्वनि देव
सवितदुरितानि परामुवा।
यद्भद्रन्तन्न आ सुवा॥१॥
(यजु-३०.३)

ओम्

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे
भूतस्य जातः पतिरेकःआसीत्।
स दायार पृथिवी द्यामुतेऽं
कर्मै देवाय
हविषा विधेम॥२॥ (यजु-१३.४)

ओम्

यऽआत्मदा बलदा यस्य
विश्वऽउपासते प्रशिष्यं
यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य
मृत्युः कर्मै देवाय
हविषा विधेम॥३॥
(यजु-२५.१३)

ओम्

यः प्राणतो निमिषतो
महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव।
यऽईशऽस्य द्विपदश्चतुष्पदः
कर्मै देवाय
हविषा विधेम॥४॥

ओम्

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च
वृढा येन स्व स्तम्भितं
येन नाकः।
योऽनन्तरिक्षे रजसो
विमानः कर्मै
देवाय हविषा विधेम॥५॥
(यजु-३२.६)

ओम्

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो
विश्वा जातानि परि
ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो
अस्तु वर्यं स्याम पतयो
रयीणाम्॥६॥
(ऋ-१०.१२१.१०)

ओम्

स नो बन्धुर्जनिता स
विद्याता धामानि वेद
भूवनानि विश्वा।
यत्र
देवाऽअमृतमानशानास्तुतीये
धामन्नध्यैरयन्त॥७॥
(यजु-३२.१०)

ॐ

अग्ने नव सुपथा
रायेऽस्मान्विश्वानि वेद
वयुनानि विद्वान्।
युयोध्युस्मज्जुहुराणमेनो
भूयिष्ठां ते
नमऽउत्तिं विधेम॥८॥
(यजु-४०.१६)

इति ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना

अथ दीप प्रज्ज्वलनं – ॐ भूर्भुवः स्वः:

(इस मंत्र का उच्चारण करते हुए दीप प्रज्ज्वलित करेंगे)

अग्नि स्थापन मंत्र

अग्निस्थापन-मन्त्र

भूर्भुवः स्वर् द्यौरिव
भूमा पृथिवीव वरिष्णा।
तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि
पृष्ठेऽग्निमन्त्रादमन्त्राद्यायादधे॥

देवो का आह्वान करेंगे

उद्बुध्यस्वाग्ने

प्रति जागृहि
त्वमिष्टापूर्ते
सऽसृजेथामयं च।
अस्मिन्सध्येऽअध्युत्तरस्मिन्
विश्वे देवा
यजमानश्च सीदत् ॥

समिधाधान



समिधाधान-मन्त्र
 ओ३म् अयं त इधम्
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्द्व
 वर्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनानाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥१॥

प्रथम

समिधाधान-मन्त्र

समिधाग्निं दुवस्यत
 घृतैर्बौद्यतातिथिम् ३८
 आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥

द्वितीय

समिधाधान-मन्त्र

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं
 तीनं जुहोतन । अग्नये
 जातवेदसे ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥३॥

तृतीय

समिधाधान-मन्त्र

ओ३म् तं त्वा
 समिद्धिरङ्गिरो घृतेन
 वर्द्धयामसि ।
 ब्रह्मचोचा यविष्ट्य
 स्वाहा ॥
 इदमग्नये इङ्गिरसे-इदं
 न मम ॥४॥

(यजु.-३.३)

चतुर्थ

पञ्चघृताहुति मन्त्र - निम्न मन्त्र से पाँच घृत की आहुतियाँ देंगे ।

ॐ अयं त इधम् आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्द्व वर्द्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनानाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम ॥

पञ्चघृताहुति-मन्त्र

ओ३म् अयं त इधम्
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्द्व
 वर्द्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनानाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥

(1)

पञ्चघृताहुति-मन्त्र

ओ३म् अयं त इधम्
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्द्व
 वर्द्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनानाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥

(2)

पञ्चघृताहुति-मन्त्र

ओ३म् अयं त इधम्
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्द्व
 वर्द्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनानाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥

(3)

पञ्चघृताहुति-मन्त्र

ओ३म् अयं त इधम्
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्द्व
 वर्द्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनानाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥

(4)

पञ्चघृताहुति-मन्त्र

ओ३म् अयं त इधम्
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्द्व
 वर्द्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनानाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥

(5)

जलसिञ्चन



जलसिञ्चन-मन्त्र

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥१॥

इस मंत्र से वेदी के पूर्व दिशा में

जलसिञ्चन-मन्त्र

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥२॥

इस मंत्र से वेदी के पश्चिम दिशा में

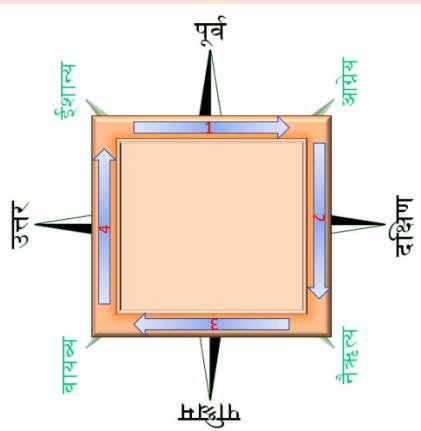
जलसिञ्चन-मन्त्र

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व

इस मंत्र से वेदी के उत्तर दिशा में

तत्पश्चात निम्न मंत्र के साथ ईशान-आग्नेय-नैऋत्य-वायव्य से ईशान कोण तक जल सिंचन करेंगे ।

ओम् देव सवितः
प्रसुव यज्ञं प्रसुव
यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः
केतं नः पुनातु
वाचस्पतिवर्चां
नः स्वदतु॥ ४॥



आधारावाज्यभागाहुति

निम्न मंत्रों के साथ यज्ञाग्नि में चार आहुतियाँ देंगे ।

आधारावाज्यभागाहुति

प्रथम मन्त्र से
कुण्ड के उत्तरभाग
ओम् अग्नये
स्वाहा ॥
इदमग्नये-इदं
न मम ॥१॥

आधारावाज्यभागाहुति

द्वितीय मन्त्र से
कुण्ड के दक्षिणभाग
ओम् सोमाय
स्वाहा ॥
इदं सोमाय-इदं
न मम ॥२॥

आधारावाज्यभागाहुति-मन्त्र
निम्नलिखित मन्त्रों से
यज्ञकुण्ड के मध्य में
ओम् प्रजापतये स्वाहा ॥
इदं प्रजापतये-इदं न मम ॥१॥
ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥
इदमिन्द्राय-इदं न मम ॥२॥

कालानुसार आहुति मन्त्र – निम्न मंत्रों से कालानुसार चार आहुतियाँ देंगे ।

प्रातःकालीन मन्त्र

ओम् सूर्यो न्योतिन्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१॥
ओम् सूर्यो वर्चो न्योतिवर्चः स्वाहा ॥२॥
ओम् न्योतिः सूर्यः सूर्यो न्योतिः स्वाहा ॥३॥
ओम् सज्जूदेवेन सवित्रा सज्जूरुषसेन्द्रवत्या ।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥४॥

सायंकालीन मन्त्र

ओम् अग्निन्योतिन्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥
ओम् अग्निवर्चो न्योतिवर्चः स्वाहा ॥२॥
ओम् अग्निन्योतिन्योतिरग्निः स्वाहा ॥३॥
ओम् सज्जूदेवेन सवित्रा सज्जू रात्रेन्द्रवत्या ।
जुषाणोऽग्निवैतु स्वाहा ॥४॥

उभयकालीन मंत्र – निम्न मंत्रों से उभयकालीन चार आहुतियाँ देंगे ।

उभयकालीन-मन्त्र

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।
इदमग्नये प्राणाय-इदं न मम ॥ १॥
ओम् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ।
इदं वायवेऽपानाय-इदं न मम ॥ २॥
ओम् स्वरग्दित्याय व्यानाय स्वाहा ।
इदमादित्याय व्यानाय-इदं न मम ॥ ३॥
ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवायादित्येभ्यः
प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।
इदमग्निवायादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः
-इदं न मम ॥ ४॥

उभयकालीन
समर्पण-मन्त्र
ओम् आपो ज्योती
रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः
स्वरों स्वाहा ॥

प्रार्थना मंत्र – निम्न मंत्रों से उभयकालीन तीन आहुतियाँ देंगे ।

उभयकालीन प्रार्थना-मन्त्र

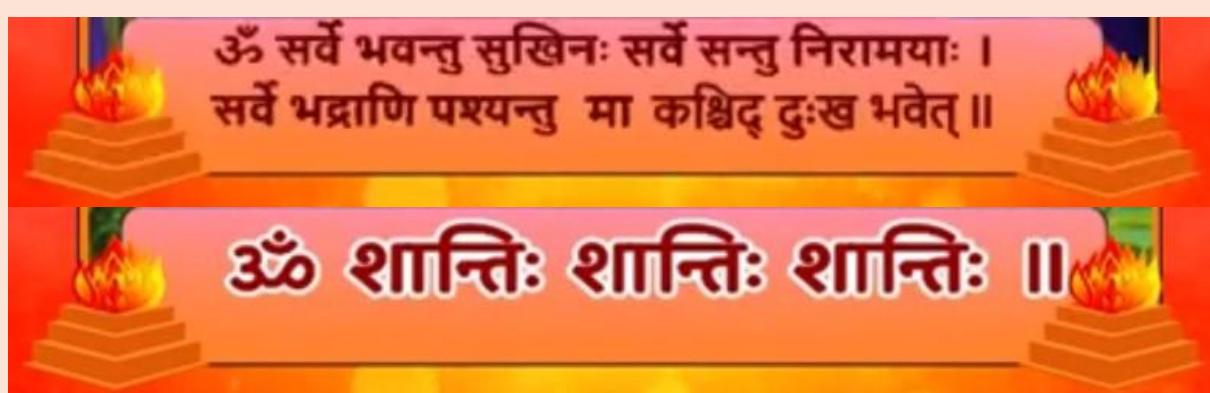
ओं यां मेधां देवगणाः
पितरश्चोपासते।
तया मामद्या मेधयाग्ने
मेधाविनं
कुरु स्वाहा॥१॥

ओम् विश्वानि देव
सवितर्दुरितानि परासुवा।
यद्भद्रन्तन्न आ सुव॥ २॥
ओम् अग्ने नय सुपथा
रायेऽअस्मान्विश्वानि देव
वयुनानि विद्वान्
युयोध्युस्मज्जुहुराणमेनो
भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं
विधेम स्वाहा॥ ३॥

गायत्री मंत्र – तत्पश्चात् गायत्री मंत्र से संकल्पानुसार आहुतियाँ देकर यज्ञ की पूर्णाहुति करेंगे ।



विश्व कल्याण की कामना एवं शांति मंत्र –



इति

नोट :- यह लघु पुस्तिका स्वामी यज्ञदेव जी के वीडियो ([लिंक](#)) के आधार पर देव यज्ञ में आम जन के सहायतार्थ बनायी गई है। इसका कोई आर्थिक निहितार्थ नहीं है।